KAVITANJALI

कवितांजलि

DR RAM LAKHAN PRASAD

KAVITANJALI

कवितांजलि

DR RAM LAKHAN PRASAD

कवितांजलि

कविताओं का संग्रह

डॉक्टर राम लखन प्रसाद

January, 2024

This is my 76th publication. All the publications are posted online and part of my Google Drive.

This is a copyright material.

© **Dr Ram L Prasad**
srlprasad40@hotmail.com

Publishers: Prasad Family Publication
76 Ghost Gum Street, Bellbowrie, Qld 4070
AUSTRALIA

Printers: Clark and Mackay Brisbane, Australia.

2024

समर्पण

हमने अपने सभी लेखों के लिए अपने बुजुर्गों का समरण किया है और आज भी उन्हीं को इस प्रकाशन को समर्पित करता हूँ क्यूंकि उन्हीं की सौजन्य से हमने अपने सभी गुणों को हासिल किया है। हमको जब भी थोड़ी सी कुछ सहूलियत मिलती है तो मैं अपने बुजुर्गों का आदर सत्कार करता रहता हूँ। यह सब ज्ञान, शान और मर्यादा उन्हीं के द्वारा हम को प्राप्त हुवा है। मैं उन सब को अपना हार्दिक धन्यबाद देता हूँ।

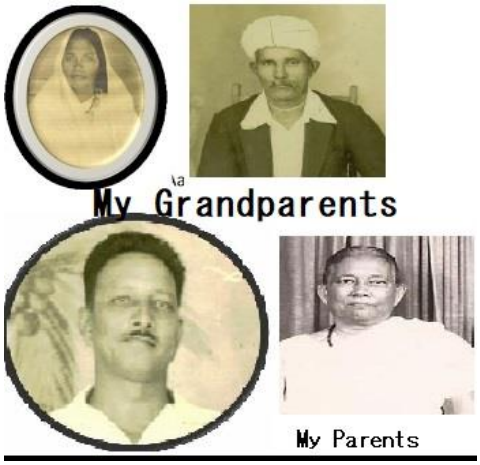

प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में॥
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हे पा जाऊं मैं।
अर्पण करदूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥
यदि मानव का मुझे जनम मिले, तव चरणों का दास बनू।
इस पूजक की एक एक रग का, हर तार तुम्हारे हाथों में॥
जब जब संसार का कैदी बनू, निष्काम भाव से काम करूँ।
फिर अंत समय में प्राण तजूं, निरंकार तुम्हारे हाथों में॥
मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में॥

भूमिका

माननीय श्री हरीश चंद्र शर्मा, फिजी के भूतपूर्व उपप्रधान मंत्री

मुझे डॉक्टर राम लखन प्रसाद ने अपने कवितांजलि के भूमिका लिखने का अवसर प्रदान किया इसके लिए मैं जहाँ उनको धन्यवाद देता हूँ वहीँ इस सम्मान का आदर करता हूँ। इन्हों ने १९८० से लेकर अभी तक अपने कई रचनाओं को हमारे समक्ष रक्खा है जिन में उनकी कहानियां, निबंध, कवितायेँ और जीवन के कई अन्य पहलुओं के प्रसारण शामिल हैं। उनकी यह कवितांजलि हिंदी साहित्य की दुनियां में सब से नवीन रचना है।

इतना कहते हुए मुझे फक्र होता है की डाक्टर जी की कल्पना शक्ति की कोई सीमा नहीं है। मैं तो यही कहूंगा की जहाँ न जा सके रवि वहां पहुंचे हैं हमारे ये कवि और इन की रचनाएं पाठकों को एक नहीं रौशनी प्रदान करती हैं तथा करती ही रहेंगी।

अपने हर एक लेख में इन्हों ने अपनी सफलता का श्रेय ईश्वर,अपने गुरुजनों और अपने पूर्वजों को देते रहे हैं। ख़ुशी तो इस बात की है की आप अपनी प्रशंसा नहीं करतें है बल्कि इनके पाठक इन के रचनाओं का आदर कर के इनको अपने प्रसंशा का मौका प्रदान किया है।

कवि रहीम ने ठीक ही कहा है की 'बड़े बड़ाई ना करैं, बड़ो न बोल बोल ।'रहिमन' हीरा कब कहै, लाख टका मम मोल।। जो सचमुच बड़े होते हैं, वे अपनी बड़ाई नहीं किया करते, बड़े-बड़े बोल नहीं बोला करते। हीरा कब कहता है कि मेरा मोल लाख टके का है। हमारे कवि डॉक्टर राम लखन प्रसाद भी आत्म प्रशंसा से परे हैं।

हमारे सामने जो कवितांजलि की रचना प्रस्तुत की गई है वो कई वर्षों की कठिन परिश्रम का फल है तथा मुझे विश्वास है की इस पुस्तक को पढ़ते समय पाठक जहाँ आनंद उठाएंगे वहीँ वे आत्मबिभोर भी हो जाएंगे।

हमारी परम पिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है की डॉक्टर जी को लम्बी उम्र प्रदान करें ताकि आप साहित्य के संसार में और भी सेवा करतें रहें जिस से हम सब का कल्याण होता रहे।

आप के अकथ परिश्रम और सभी शुभ कर्मों के लिए आप को बधाई हो यही हम सब की मनो कामना है।

हरीश चंद्र शर्मा,
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया |

परिचय

हमारा परिचय अपने पाठकों को देना हमारे लिए कठिन है फिर भी मैं कोशिश करता हूँ की अपने सारे जीवन की कहानी तो नहीं पर कुछ खास विषयों का वर्णन करू। बचपन तो अपने बुजुर्गों के साथ उनके किसानी जीवन में बड़े सुकून से बीता था। लड़कपन में प्रारंभिक शिक्षा के बाद कई ज्ञान मंदिरों में हमारा प्रशिक्षण होता रहा और मैं एक अध्यापक बन गया तथा कितने सामाजिक संस्थाओं में शिक्षण का कार्य करता रहा। हमारे हुनर और गुणों को परख कर हम को पाठ्यक्रम का मुखिया बनाया गया और अध्यापकों को सलाह देता रहा तथा कई राष्ट्रीय इम्तिहानों का सञ्चालन भी करता रहा। पचास वर्षों के सेवा के बाद मैं ने सरकारी नौकरी से अवकास ले ली और ब्यापारिक संस्था में शामिल हुवा जहा हम ने अपने विद्यालंकार की उपाधि हासिल किया। ग्यारह वर्षों के बाद मैं मादरेवतन को छोड़ कर विदेश चला आया और यहाँ भी शिक्षण का काम एक उच्च शिक्षक के रूप में दस वर्षों तक कर के अवकास ग्रहण किया और अपने मकान को अपना मंदिर बना कर जीवन बिताने लगा। अपने जीवन के ८४ वर्षों की अवधी में हम ने जहाँ समाज की विभिन्न प्रकार से सेवा करता रहा वहीँ अपने रिश्तों को बरक़रार रखा हूँ।

एक लेखक के रूप में हम ने अपने विचारों को अपने अनगिनत निबंधों, कहानियों, कविताओं और भाषणों में व्यक्त करता रहा। हमारा जीवन ख़ुशी, सुखी और शांति से सुसज्जित है क्यूंकि मेरा अटल विश्वास परम पिता परमेश्वर के आशिर्बाद में सदा से रहा है। इस कवितांजलि में हम ने अपने विचारो को निचोड़ के रख दिया है बस यही हमारा सही परिचय है।

प्रस्तावना

इस प्रकाशन के प्रस्तावना लिखने से पहले मैं यह कहना जरुरी समझता हूँ की मेरी सभी रचनाएँ मेरे दिल और दिमाग की क़ाबलियत है जिनको मैंने खुद रचा है और सजाया है।
इस प्रकाशन में मेरे अपने रचे हुए कवितायेँ हैं जिन को मैं ने अपने बचपन से ही अपने मष्तिष्क में छुपाये और सजाये रक्खा था पर अब समय आने पर वे सब उभर ही गएँ हैं। शब्दों को चुन चुन के हमने इकठ्ठा किया है जिनको हमारे पाठक जरूर चाहेंगे।
एक बात और मैं कह देना चाहता हूँ और वह है की यह सब कविता ज्ञान मुझे हमारे गुरुजनो और बुजुर्गों की कृपा है। उन सब के चरणों में मैं अपना शाष्टांग प्रणाम प्रगट करता हूँ। कितने कविताओं को हमने अपने दोस्तों और सहपाठीययों को यादों से रचा है क्यूंकि उनके ही साथ रह कर हम ने बहुत कुछ सीखा था। इस के लिए मैं उन सभी को भी कोटि कोटि धन्यबाद देता हूँ।
मेरे सारे जीवन की सफर एक ऐसी चलन थी जिस में जहाँ हमारे लोगों का आशिर्बाद था वही हमारे सभी दिलचस्पियों का अनुराग था। हमारा बचपन बुजुर्गों के सम्मलित परिवार में गुजरा जहाँ की शिक्षा दिक्षा ऐसी रही की हमारा सारा जीवन खुशी, सुखी और भक्ति भाव से सुसज्जित थी। इस वातावरण में पल कर मैं आज अपने आप को एक प्रेम का पुजारी समझता हूँ तथा अपने सभी रिश्तों को सुरक्षित रखने की चेस्टा करता रहता हूँ। कृषि ज्ञान तो मिली ही थी लेकिन विभिन्न शिक्षा के संस्थाओं ने मुझे साहस, लगन , प्रेरणा और कोशिश का मार्ग दिखाया था। यही मार्ग पर मैं चलता रहा और अपने परिवार, रिश्तेदारों तथा समाज का सेवा बड़े उत्साह से करता रहा। उम्र ढलती रही और मैं उभरता रहा उस परम पिता परमेश्वर के कृपा और आशिर्बाद से जिस को हम ने अपने जीवन के पुरे भार को सौंप कर सुख चैन की सैया पर आराम करता रहा।
जब मैं अपने प्रस्ताव को लिख रहा था तो एक अजीब बिचार हमारे मन में आया की चैन से जीने के लिए हम को चार रोटी और दो कपड़े काफी है पर बेचैनी से जीने के लिए चार गाड़ी और दो बंगले भी कम है।अपने इस कवितांजलि की रचना करते वक़्त कभी कभी गुस्सा आजाय करता था क्यूंकि मुझे उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहे थे लेकिन फिर याद आया की गुस्सा करना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही है क्यूंकि आप जिसपे गुस्सा करते हैं उससे ज्यादा आपका खुद का नुकसान हो जाता है । मैं मानता हूँ की हमारी हर सफलता संघर्ष से होकर गुजरती है इसलिए बिना संघर्ष के हम कभी भी सफलता की कल्पना भी नहीं कर सकतें हैं । कवितांजलि हमारे संघर्ष की नतीजा है।
बस हम ने मुस्कुराते हुए अपने इस रचना को गढ़ ही लिया और अब इस जीवन में मुस्कुराना हमारे लिए एक कला हो गया है। जिसने भी इस कला को सीख लि या वो जीवन में कभी दुखी हो ही नहीं सकता है।

कवितांजलि

यह संग्रह जिसको मैंने 'कवितांजलि' का नाम दिया है यह हमारे वो रचना हैं जिसको मैं अपना चहक या कलरव भी कहता हूँ तो इस को मैंने अपने जवानी से सजाता चला आया हूँ इस लिए इन रचनाओं को मैं अच्छी तरह से पहचानता हूँ। अपने जीवन के ८० वर्षों की इस के और मेरी घनिष्ट मित्रता रही है।
यह सभी रचनाएँ (कवितायें हो या अन्य लेख) मेरे ह्रदय के इतने निकट रहें हैं की मैं इनको अपने से जुदा देख ही नहीं सकता हूँ। कभी मैं इनको अपने आत्मा की कला कहता हूँ तो कभी इनको मैं अपने ह्रदय की अनुभूति भी कहता हूँ। हमारे कितने मित्रों ने इन को पढ़ने के बाद यह कहा है की यह सब कवितायेँ कागजों पर निकाल कर रख देने वाले व्यक्तिगत ह्रदय का ही दूसरा नाम कहा जा सकता है।
हमारे एक निकट के भक्तिमान दोस्त ने कहा है की ये सब मेरे जीवन के सत्यान्वेषण में जो स्क्रिति, जो प्रेरणा छंद बृद्ध करती है। पर मैंने इन सब संग्रहों को अपने जिगर की गीत ही समझा है जिनको मैं गाता रहा और चलता रहा इस जीवन के सभी सहज और कठिन राहों पर।
मैंने अपने इस कविता ज्ञान का श्री गणेश अपने प्राइमरी स्कूल से ही किया था और इस दिलचस्पी को धीरे धीरे बनाता चला आया हूँ और आज मैं कई कविताओं का रचन|त्कार बन चूका हूँ । यह कला हमारे ह्रदय के अंदर चलती ही रहती है तथा पाठक इस संग्रह को पढ़ कर यह अनुमान तो लगा ही सकेंगे की यह कविता करने की कला कहीं जल्द जाने वाली नहीं है |
इस कला को मैं ने बड़े प्रेम से बढ़ावा देता रहा और आगे भी करता रहूँगा जब तक इस शरीर में सांस हैं। मुझे एक बात और कहनी है इस संघ्रह के बारे में और वो है की हमारे सभी कवितायेँ जो यहाँ हैं और चाहे कहीं भी छापें गए हो उन सब का रचना मेरे अपने विचार धाराओं से प्रस्तुत की गयीं हैं। यह सब हमारे निजी अनुभव के प्रकाशन हैं जिनको पाठकगण जरूर पसंद करेंगे। यही हमारा ख़याल है।
पाठकगण देखेंगे की जहाँ कविताओं की भरमार हैं वहीँ हम ने अपने निबंधों से उनका समिश्रण किया है जिस से यह जाना जा सके की हर एक कविता के भाव क्या है। कविता साहित्य का एक अंग है। कविता की एक निश्चित परिभाषा देना कठिन है लेकिन इतना कहा जा सकता है कि कविता आत्मा द्वारा अनुभूत भावों एवं विचारों का प्रस्फुटन है जो छन्द और नियमित गति से बंधी होने के कारण ताल तथा लय को अपने में समाविष्ट करती हैं। हिन्दी के कई विद्वानों ने अपने

विचारासार कविता को परिभाषित करने का प्रयास किया हैं। हमारे कवितांजलि में भी वही रूप, चित्रण, लय, तुक और ध्वनि विराजमान है जो अक्सर सभी कविताओं में होती हैं।

हमारे लिए भी सदा से कविता की परिभाषा बहुत सुन्दर अर्थ प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य कहलाता रहा तथा जब मानव एक सौन्दर्यात्मक प्राणी है तो वह हमारे तरह समाज में रहकर कुछ अनुभूति करता है एवं उसे भिन्न-भिन्न माध्यमों से प्रकट करता है । जब वह अपनी अनुभूति को भाषा के माध्यम से इस प्रकार अभिव्यक्त करता है कि उसमें सरलता एवं सरसता हो तो वह रचना एक कविता का रूप ले लेती है। उस रचना में माधुर्य तथा ओज हो और ह्रदय को स्पन्दित करने की शक्ति हो, तो हम उसे कविता कहते हैं। कविता वह साधन है जिसके द्वारा सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है।

हम ने भी अपने इस कवितांजलि के जरिये ऐसा ही करने का प्रयास किया है। जैसी कवितांजलि को मैं पहचानता हूँ उस का रूप हमारे जीवन से मिलता जुलता है और उससे मेरी घनिष्ट मित्रता है। वह मेरे ह्रदय के बिलकुल करीब है। जिन आँखों या ह्रदय ने इसको आलोचित या परिक्षण की दृष्टि से देखा है वही इसके रंग रूप को समझ कर रचना किया है। मैं तो इसे अपने आत्मा की कला ही समझूंगा क्यूंकि अब यह मेरे ह्रदय की अनुभूति बन गई है। कोरे कागज़ पर शब्दों को चुन चुन कर रखने वाले व्यथित ह्रदय का यह दूसरा नाम है। मैं तो अब कहता हूँ की वो मेरे स्मृति और प्रेरणा में छंद-बद्ध हो गई है और हमारे पाठक इस का रसपान करने के लिए उत्सुक हैं।

हमारे इस कवितांजलि का एक और खास विशेषता है जिसमे गद्य और पद्य याने कविताओं और निबंधों का मिलाप या सम्मिश्रण है तथा यही गुण इसको इतिहास का एक नया राह या मोड़ देती है जिसको पाठक अपने घर आँगन और पुस्तकों के आलमारी पर सुसज्जित पाएंगे।

हमारी कवितायें

हमारी कविताओं की कला अब मेरी आदत सी बन गई है और दिल दिमाग में समां गई है

इस आदत ने मेरी दुनिया ही बदल दी है बस सुबह शाम दिन रात की धड़कन बन गई है

सोता हूँ या जागता हूँ पर अपने कविताओं के साथ एक मधुर प्यार का नगमा बना लिया हूँ

ये कोई पागलपन नहीं है और सिर्फ लगन भी नहीं है पर येआदत अब सर्वापरि बन गई है

इस को अपने मन की ईक्षा कहूँ या फिर कहूँ इस को अपने दिल और दिमाग की पूजा

चलो कह ही देता हूँ की इसकी आदत और लगन से अच्छा अब नहीं है कोई और दूजा

हमारी यह आदत और लगन नहीं हैं केवल हमारी कविता की कला या उनकी कहानी

इस जटिल आदत और लगन को अब मैं कहता हूँ हमारी दीवानगी जो बानी है रवानी।

हमारा मन

हमारा मन जरा सा अल्हड है और यह थोड़ा सा चंचल भी है
इसी लिए मैं इसको अपने काबू में रखता हूँ जो मंचल भी है
सब भले बुरे का ध्यान है इस को आगे क्या होगा ये सब जाने
यही तो मेरा मन है जो हमारी सभी इक्छाओ को भी जाने माने
भले यह यहाँ वहां दौड़ लगता है पर मैं इस को बस में रखता हूँ
हमारे लिए ये अपना है और सब आगि का फल देता भी रहता है
अपने मन की मैं सुनता हूँ और मेरा मन हमारा भी सुन लेता है
हम एक दूजे के मन के मीत और साथी है वह मेरी सुन लेता हैं
इस मन के मौजी हैं हम यह हमारा सब कुछ जान मान लिया है
इसकी तो मैं मान रखता हूँ क्यूंकि ये हमको बहुत कुछ दिया है

यारो न सुनो कभी अगर तुमको बुरा कहे इस जिंदगी में कोई
लेकिन किसी से भी न कहो अगर तुम्हारा बुरा करता है कोई
इतना करते रहो की रोक लो उन सब को जो गलत चले कोई
माफ़ी करदो उन सभी को अगर तुम से खता करता है कोई

हर चीज बिकाऊ है यहाँ

इस दुनिया के यह बाज़ार में यहाँ हर चीज़ बिकाऊ है
प्यार मोहब्बत उल्फत और हमारे चाहत भी बिकाऊ है
हम सब की कुछ न कुछ कीमत तो है यहाँ यह सही है
जज़्बात एहसास सकून और राहत जैसी चीज़ बिकाऊ है
चाहे ज्यादा हो या कम पर हर एक चीज़ का एक ही दाम है
रिश्ते नाते इज़्ज़त और गैरत यह भी सब यहाँ पर बिकाऊ है
ताजुब है की हम सब बिक रहें हैं चंद कौड़ियों के मोल यहाँ
दीन ईमान जमीर और सदाकत यह भी सब बिकाऊ हैं यहाँ
ये सच है सदा से लगा रहता है खरीददारों का बड़ा भीड़ यहां
सभी ख़ुशी ईमान और हमारे रहन सहन भी बिकाऊ हैं यहाँ
यह भी सच है की खरीदने वालो को सब मिल जाता है यहाँ
सब सत्ता तारीफ़ नेक नामी और शोहरत भी बिकाऊ हैं यहाँ
यह भी वो भी तुम भी मैं भी हम सब भी अब बिकाऊ हैं यहाँ
चलो अब अपनी अपनी बोली लगावो सब चीज़ खरीद लो यहाँ
अब मुझे भी अपने बिकने का सही कीमत को खोजना है यहाँ
जीवन इस तरह बिताना है की हर दिन एक नया जसन हो यहाँ
इस छोटी सी जिंदगी में जीवो ऐसे की यह जिंदगी कम पड़ जाए
मुस्कुराओ और हंसो इतना की रोना धोना भी मुश्किल हो जाए

जहाँ खोजा वही पाया

सारे जीवन भर मैं क्या खोजता रहा इस संसार में जब सब कुछ मेरे अंदर था
न जाने मैं क्यों और क्या देखता था औरों में जब मेरा ही मन हमारा दर्पण था
ये दुनियां कोई दौड़ नहीं है तू ही वो दौड़ने वाला है जिसका कोई थाह नहीं है
जरा रुक कर खुद से बातें करले क्या अंतर मन को शांत करने का चाह नहीं है
अपने सपनो की गहराइयों को समझो अपने अंदर की अच्छाइयों को समझो
आत्मसम्मान की आदत डालो जीवन सफल कर के आगे बढ़कर जीना सीखो
इस जीवन को गर खुल कर जीना है तो अपने आप से लगन लगाना सीखो
आलसी होना सारे मानव का शत्रु है तो पुरुषार्थ को अपना मित्र बनाना सीखो
इस जीवन का रहस्य यही है जिन खोजा तिन पाया का सही मतलब को सीखो
माना की ये जिंदगी हम सब की बड़ी हसीन रहेगी जब हम उस से प्यार करेंगे
अगर हो जाए कभी इस जिंदगी में रात तब फिर नए सबेरा का इंतज़ार करेंगे
तब वो पल भी आजायेगा जिस समय का हम बड़े उत्सुकता से इंतज़ार करेंगे
बस इतना याद रखना है की प्रभु पर भरोसा और अपने वक़्त पे एतबार करेंगे

कोशिश करते रहना बबुवा

बुजुर्गों ने कहा था कोशिश करते रहना एक न एक दिन हल निकलेगा बबुवा
गर आज नहीं तो कल तुझे सफलता मिलेगा कोई भी फ़िक्र मत करना बबुवा
कड़े मेहनत से मरुस्थल से भी जल निकाल लेते हैं लोग इसे याद रख बबुवा
मेहनत कर जीवन के पौधों को पानी दे बंजर जमीन से फल निकलेगा बबुवा
बस अपने सही ताकत को जुटा ले हिम्मत को अपना धधकता आग दे बबुवा
कड़ा से कड़ा फौलाद का भी तू अपने चाहत से बल निकाल सकता है बबुवा
जिन्दा रख अपने सभी उम्मीदों को गहरे समुन्दर में भी गंगाजल मिलेगा बबुवा
कोशिश जारी रखना सदा कुछ कर गुजरने की जो आज थमा वो चलेगा बबुवा |

हमारी ख्वाहिशें

हमारी ख्वाहिशें तो बहुत है इस जीवन की तो अब उनको जाहिर करता हूँ
हमारी सब से पहली ख्वाहिश है की मैं ख़ुशी और सुख से जीना चाहता हूँ
इस छोटी सी जीवन में मैं सदा अपने लोगों से उनका प्यार आदर चाहता हूँ
जब तक है जिंदगी फुर्सत न होगी काम से सबसे मिलजुल के रहना चाहता हूँ
धन दौलत माल खजाने की ख्वाहिश तो अब भी नहीं है और न ही कभी रहेगी
जितना भी मुझको कुदरत ने दिया है वही ही हमारे जीने के लिए बहुत रहेगी
पारिवारिक जनो और भक्तिमान मिंत्रों की कृपा रहे यही ख्वाहिश है हमारी
मेरे राहों में कोई कांटे न बिछाए और दुःख न दे बस यही रहेगी चाहत हमारी
इस जीवन की सफर को सही से पूरी कर चूका हूँ जो बची है वो भी सलामत रहे
पर ख्वाहिश ये भी है की मैं भी सुख से जीता रहूँ और दूसरे भी ख़ुशी से जीते रहे
कोई उदास मौसम न आये शेष जिंदगी में और हर वक़्त मैं हँसता खेलता ही रहूँ
हमारे अपने लोग हमको ऐसे ही सहारा देतें रहें और मैं भी उनको पहचानता रहूँ
हमारे ख़ुशी जीवन की बारिशें जब भी छिड़ें तब इस दिल दिमाग के तार खिल उठें
गर कोई अपनी उँगलियों से मेरे तन मन को सहलाये तो हमारे दिल में भी तरंगें उठें

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

Free-Ebooks.net